

**बिंब** पुं. (तत्.) 1. प्रतिबिंब, छाया, अक्श, अक्स, कमंडलु, प्रतिमूर्ति 2. कुंदरू नामक फल, 3. सूर्य या चंद्रमा का मंडल, 4. कोई मंडल, आभास, प्रतिच्छाया 5. काव्य में एक प्रकार का छंद।

**बिंबयोजना** स्त्री. (तत्.) साहित्य या समालोचना आदि के क्षेत्र में कल्पनामूलक आधार या भावी स्वरूप, कल्पनात्मक या अलंकृत भाषा द्वारा प्रस्तुति।

**बिंबित** वि. (तत्.) जिसका बिंब या अक्स दीख रहा हो या सामने की वास्तविक या मूल वस्तु।

**बिंबिसार** पुं. (तत्.) गौतम बुद्ध के समकालीन एक राजा, मगध के राजा अजातशत्रु के पिता।

**बिआना** सं.क्रि. (तद्.) प्रसव करना, संतान को जन्म देना, व्ययन, (पशुओं द्वारा) जनना, पैदा करना, व्याहना।

**बिकना** अ.क्रि. (तद्.) विक्रय, मूल्य लेकर दिया जाना, बेचा जाना, बिक्री होना।

**बिकवाल** पुं. (देश.) बेचने वाला, विक्रेता।

**बिकसना** अ.क्रि. (तद्.) विकसन, विकसना, विकसित होना, विकास होना, अति प्रसन्न होना, (फूल का) खिलना, फूलना।

**बिकाऊ** वि. (देश.) जो बिकने के लिए हो, विक्रेय, विक्रय योग्य, बिकने वाला।

**बिक्री** स्त्री. (तद्.) विक्रय, बेचने की क्रिया/भाव, बेचने से मिलने वाला धन।

**बिक्रीकर** पुं. (तद्.) एक प्रकार का कर अर्थात् टैक्स जिसे बेची जाने वाली वस्तु के मूल्य के अलावा क्रेता से या खरीदार से वसूल किया जाता है और सरकार को दे दिया जाता है। sales tax

**बिक्री-खाता** पुं. (देश.) सारी बिक्री का हिसाब-किताब या लेखा-जोखा।

**बिखरना** अ.क्रि. (तद्.) विकीर्ण, विकीर्णन, वस्तुओं का अथवा किसी वस्तु का इधर-उधर फैल जाना, छितराना, अलग-अलग हो जाना, दूर-दूर हो

जाना, समेकित रूप में न रह पाना, तितर बितर हो जाना।

**बिखराव** पुं. (देश.) बिखरना, बिखरे होने की अवस्था/भाव, आपस की फूट, एकता की कमी।

**बिखेरना** सं.क्रि. (देश.) बिखराना, वस्तुओं को या एक वस्तु के विभिन्न अंशों का सोद्देश्य या निरुद्देश्य फैलाना/गिराना, वस्तुओं को बिना प्रयोजन अथवा प्रयोजन से फैलाना, छितराना।

**बिगड़ना** अ.क्रि. (तद्.) विकार हो जाना, विकृत होना, दोषयुक्त होना, खराब हो जाना, प्राकृतिक दशा से हीन दशा में आ जाना, काम के समय ऐसी स्थिति का आना जिससे काम अपेक्षित स्थिति 'में' न आ सके, या उपयोगिता कम हो जाए, संबंधों में दोष आना, स्वभाव/आचरण आदि में दोष आ जाना, नष्ट होना, पशुओं का नियंत्रण में न रहना, व्यर्थ हो जाना, बेकायदा खर्च होना।

**बिगड़े दिल** वि. (देश.) शीघ्र क्रुद्ध हो जाने वाला, उग्र/क्रोधी स्वभाव वाला, बिगड़ैल।

**बिगड़ैल** वि. (देश.) उग्र/क्रोधी स्वभाव वाला, आचरण आदि की दृष्टि से बिगड़ा हुआ, कुसंगति में पड़ा हुआ, हठी, जिद्दी, बात-बात में बिगड़ने या लड़ पड़ने वाला।

**बिगहा** पुं. (देश.) बीघा, जमीन के क्षेत्र का एक माप या पैमाना।

**बिगाड़** पुं. (तद्.) विकार, बिगड़ने की क्रिया/भाव, दोष, विकृति, खराबी, हानि, परस्पर संबंधों में द्वेष/वैर, कटुता, झगड़ा, लड़ाई, वैमनस्य, मनमुटाव।

**बिगाड़ना** सं.क्रि. (देश.) ऐसी क्रिया करना जिससे काम, वस्तु आदि बिगड़ जाए, दोषयुक्त कर देना, खराब करना, हीन दशा में ला देना, काम को ठीक तरीके से न करना, यंत्र/उपकरणों आदि में ऐसी गड़बड़ कर देना कि उनकी क्रियाशीलता/उपयोगिता कम या समाप्त हो जाए, संबंधों में कटुता पैदा कर देना, पथ भ्रष्ट कर देना, तोड़-फोड़ करना या नष्ट कर देना, व्यर्थ कर देना, सतीत्व को नष्ट करना।